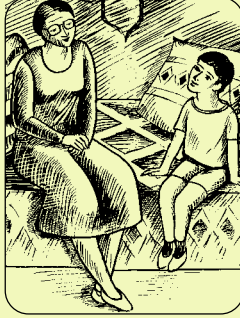


जनवाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला



एक अनूठी बाल-केंद्रित कहानी। आर्थर एक नन्हा लड़का है। बारिश के दिन हैं और उसकी दादी की कमर में गठिया का दर्द है। अगर धूप निकले तो दादी को कुछ चैन पड़े। आर्थर को बादलों पर बड़ा गुस्सा आता है। वो अपनी खिलौने वाली बंदूक से बादलों का सफाया करता है और फिर एक गर्म पीले सूरज का चित्र बनाता है जिसकी गर्मी से दादी की कमर का दर्द एकदम रफूचकर हो जाता है।

A unique child centered story.

Arthur is a little boy.

His grandmother suffers from arthritis and the rain has made her pain worse.

If it gets sunny then it would bring some relief to grannie. Arthur gets mad at the clouds.

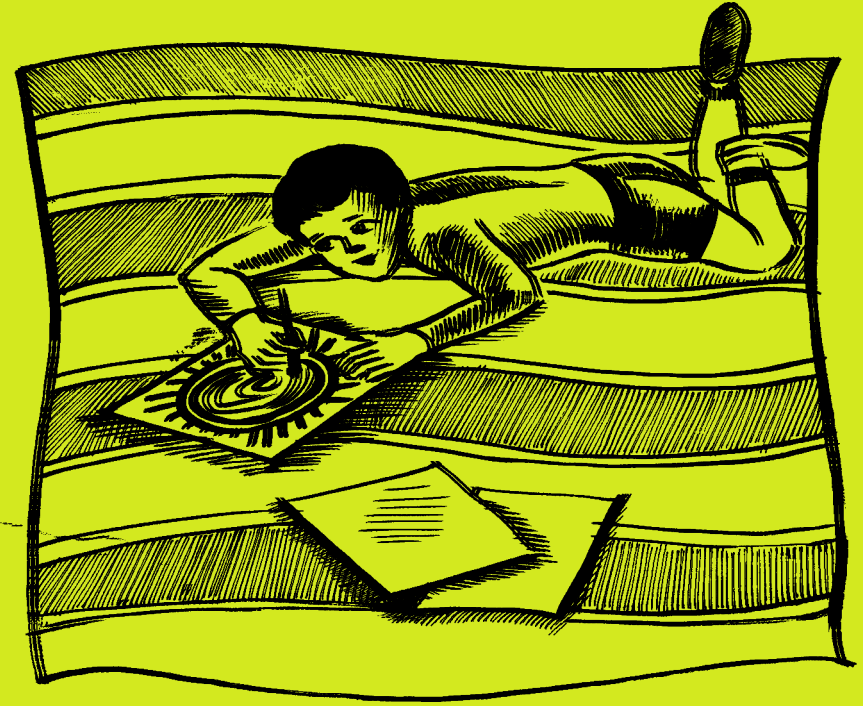
He takes his toy pop gun and shoots the clouds.

Later he draws a warm red sun for his grannie.

The warmth of the cures grannie.

नन्हे आर्थर का सूरज

हैडजैक गुलनज़रयान



Little Arthur's Sun

Hadjak Gulnazaryan

भारत ज्ञान विज्ञान समिति



इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

नन्हे आर्थर का सूरज : हैडजैक गुलनज़रयान
Little Arthur's Sun : Hadjak Gulnazaryan
प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

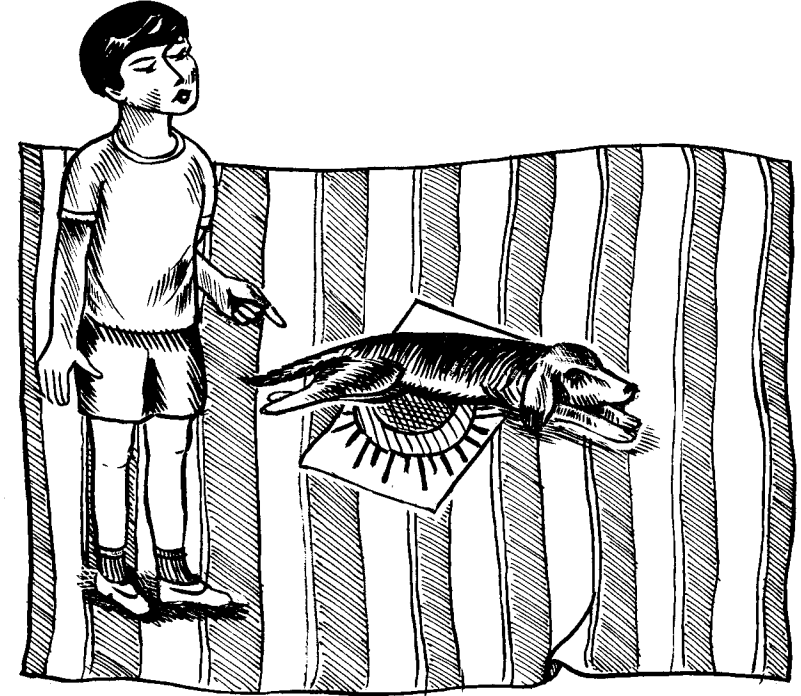
पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 10 रुपए
Price : 10 Rupees

Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket, New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

नन्हे आर्थर का सूरज

हैडजैक गुलनज़रयान



Little Arthur's Sun

Hadjak Gulnazaryan



दादी को पतझड़ से कोई लगाव नहीं था। जबकि नन्हे आर्थर को पतझड़ में बेहद मज़ा आता था। दादी को पतझड़ इसलिए नापसंद था क्योंकि पतझड़ के साथ आती थी बारिश, और बारिश से दादी के पैरों के जोड़ दुखने लगते थे।

आर्थर को पतझड़ बेहद पसंद था। पतझड़ कितनी ही बढ़िया चीज़ें लाता था। आड़ू और अंगूर, नाशपाती और सेब। और मां इन फलों से तरह-तरह के 'विटामिन' बनाती थीं।

Grannie was not fond of autumn. Little Arthur, on the other hand, enjoyed it. Grannie was not fond of autumn because it brought rain, and that made her legs ache.

Arthur liked autumn very much. It brought so many good things. Peaches and grapes, pears and apples. And Mother would make all sorts of "vitamins" from the fruit.



पतझड़ की हर सुबह मां पिताजी से कहतीं, “जाओ बाज़ार से कुछ सेब और अंगूर ले आओ— देखो आर्थर को अब ‘विटामिनों’ की ज़रूरत है।”

तब पिताजी बाज़ार जाते और वहां से कुछ सेब, नाशपाती, अनार और साथ में और बहुत कुछ ले आते।

नन्हे आर्थर को तभी तो पतझड़ से इतना गहरा प्रेम था।

दादी को नहीं। दादी को ‘विटामिनों’ की ज़रूरत नहीं थी। बड़ी उम्र के लोगों का अक्सर विटामिनों के बिना ही काम चल जाता है। बड़े लोग आड़ू, अंगूर और नाशपाती खाते अवश्य हैं। परंतु वह उन्हें सिर्फ अपने मजे के लिए खाते हैं। बड़ों के लिए तो वह केवल आड़ू, अंगूर और नाशपाती होते हैं, न कि ‘विटामिन’।

Every autumn morning she would say to father:

"Mesrop, go and buy some apples and grapes: the child needs vitamins."

And Father would go to the market and buy some apples, pears, pomegranates and much besides.

Little Arthur was exceedingly fond of autumn.

Not Grannie. Grannie did not need vitamins. Grown-ups generally did not seem to need vitamins. Grown-ups seemed to eat peaches, grapes and pears just for the fun of it. As far as they were concerned, they were simply peaches, grapes and pears, and not vitamins at all.



बाहर बारिश गिर रही थी और अंदर दादी खाट पर पड़ी थीं। वह अपने पैरों को दबा रहीं थी और हल्के-हल्के कराह रहीं थीं।



The rain was drizzling outside, and Grannie was lying on the settee indoors, hunched up; she was lying there, softly moaning to herself.



आर्थर उनके पास गया।

“दादी। क्या तुम मुझे सुन रही हो दादी?” उसने पूछा।

“क्या बात है बेटा?” दादी ने कहा।

“क्या तुम्हारे पैर में फिर दर्द है?” उसने पूछा।

“हां मेरे प्यारे बेटे,” दादी बुदबुदायीं।

उसने दादी को एक संतरा दिया।

“खा लो इसे। इसके विटामिनों से तुम्हारा दर्द दूर हो जायेगा,” उसने कहा। दादी मुस्करायीं।

“तुम्ही खा लो इसे बेटा,” उन्होंने जवाब दिया, “संतरों से मुझे कुछ फायदा न होगा। मुझे चाहिए सूरज की धूप। पर यह सूरज मुझे परेशान करने के लिए बार-बार बादलों के पीछे छिप जाता है।”

"Ooff, ooff, ooff."

Arthur went over to her.

"Gran, do you hear me, Gran?" he said.

"What is it, balik-djan?" she replied.

"It's your leg again, isn't it?" he asked.

"Yes, my dear," was all she murmured.

He offered Grannie an orange.

"Go on, eat up the vitamins, they'll take the pain away," he said.

"You have it, balik-djan," she replied. "Oranges won't help me. I need sunshine, but the sun's gone behind the clouds to spite me."



नन्हे आर्थर को बादलों पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपने कुत्ते कोटो को पलंग के नीचे से बुलाया फिर अपनी पॉप-गन (खिलौने वाली बंदूक) उठाई और बाल्कनी में चला गया।

उसने पिल्ले से कहा, “तुम बादलों पर ज़ोर से भूँको और और मैं उन पर अपनी बंदूक से गोली चलाता हूँ।”

कोटो दो-चार बार भूँका, परंतु बहुत ज़ोर से नहीं। दरअसल वह समझा कि आर्थर उसके साथ खेलना चाहता है, इसलिए वह खुशी में भूँका था। उसकी भूँक में कोई दम न था। ऐसी भूँक से भला काला बादल कैसे डरता?

सच तो यह था कि आर्थर को पिल्ले की भूँक सुनाई ही नहीं पड़ी। वह अपनी बंदूक को बादलों की ओर ताने उन पर गोलियां बरसाने में बहुत व्यस्त था। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था और वह चीख रहा था।

Little Arthur was very cross with the clouds. He summoned his little dog Kotot from under the bed, picked up his pop-gun and went into the balcony.

"Bark at the clouds," he told the pup, and I'll shoot them with my gun."

Kotot gave a couple of barks, but not very fiercely. No doubt he did not understand and thought Arthur wanted to play with him; so he gave a happy bark. Such a bark would certainly not scare any cloud.

As a matter of fact, Arthur did not even notice Kotot barking. He was firing his gun with a ferocious look on his face, yelling:

"Take that, you horrors, what do you want to hide the sun for? Take that! Boom, boom, boom."

“भागो! बादलों भागो। तुम क्यों सूरज को छिपाना चाहते हो? अब झेलो गोली ढिशूम! ढिशूम!”

और वह तब तक गोली चलाता रहा जब तक उसका मुंह ‘ढिशूम! ढिशूम!’ चीखते-चीखते थक नहीं गया।

तब तक बादल कुछ थोड़ा सा घबरा गए थे और बारिश बंद हो गई थी। परंतु सूरज अभी तक पूरी तरह नहीं निकला था।

“यह शायद इसलिए है क्योंकि मेरी बंदूक इतनी छोटी है,” उसने सोचा। अगर आर्थर के पास उसके दोस्त रचिक जितनी बड़ी बंदूक होती तो बस एक ही ढिशूम में सारे बादल फट कर बिखर जाते।

परंतु आर्थर के पास बड़ी बंदूक नहीं थी और उसका दोस्त रचिक बहुत दूर रहता था।

आर्थर बेचारा अब क्या करता? आर्थर दुखी-दुखी अंदर के

By that time the clouds had taken fright just a little bit and the rain had stopped; yet the sun did not come out all the same.

Now, if Arthur had a cannon like Rachik had, he would give just one boom and the clouds would disperse at once.

But Arthur did not have a cannon, and Rachik lived a long way away. There was nothing for it; Arthur trailed sadly back into the room and sat down next to Grannie.

"Gran, do you hear me, Gran?" he asked.

"Now what, balik-djan?" she replied.

"I only scared the clouds a teeny-weeny bit. The rain stopped, but the sun is still hiding. You see, I haven't got a cannon, and the clouds aren't very scared of my gun."

कमरे में गया और दादी के पास जाकर बैठ गया।

“दादी, क्या तुम मुझे सुन रही हो दादी?” उसने पूछा।

“अब क्या हुआ बेटा,” दादी बोलीं।

“मैं बादलों को थोड़ा-बहुत ही डरा पाया! बारिश तो रुक गई परंतु सूरज अभी भी छिपा है। देखो, मेरे पास बड़ी बंदूक तो है नहीं, और बादलों को मेरी छोटी बंदूक से कोई खास डर नहीं लगता।”

दादी मुस्कुरायीं।

“मेरे बेटे, तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया,” उन्होंने कहा, “तुमने बारिश को तो डरा कर रुका दिया और उसी से मेरी तबियत थोड़ी बेहतर हो गई। मुझे पैर का दर्द तो अब महसूस ही नहीं हो रहा है। मैं तुम्हारे पिता से कहूंगी कि वे तुम्हारे लिए भी एक बड़ी बंदूक ले आयें। तब तुम इन सारे बादलों को भगा देना।”

Grannie smiled.

"Oh thank you, my dear," she said. "But look: you scared off the rain and made me a wee bit better, my leg hardly aches at all now. I'll tell your Dad to buy you a cannon. Then you can drive all those clouds away."

"Grannie, do you truly feel better?" he persisted.

"Ah, I feel so much better that I reckon half the pain has gone."

"Grannie," said Arthur, suddenly perking up, "I know what we ought to do. Now I am gong to drive away the other half of your pain."

"How will you do it without a cannon?" asked Grannie with a smile.

“दादी क्या तुम्हें अब सचमुच अच्छा लग रहा है?”
उसरने दुबारा पूछा।

“मैं अब पहले से कहीं बेहतर महसूस कर रही हूँ।
मेरा आधा दर्द तो रफूचकर हो गया है।”

“दादी,” आर्थर ने एक दम संभलते हुए कहा, “अब
मुझे समझ में आया कि हमें क्या करना चाहिए। अब मैं
तुम्हारा बचा हुआ आधा दर्द भी भगा दूंगा।”

“तुम बड़ी बंदूक के बिना कैसे करोगे?” दादी ने
मुस्कराते हुए पूछा।

“तुम देख लेना, मैं उसे भगा कर ही मानूंगा। मां, मां,
क्या तुम मेरी आवाज़ सुन रही हो?”

“क्या बात है बेटा?” मां ने रसोई में से पूछा।

“मुझे कुछ कागज़ चाहिए” उसने कहा।

“पिताजी की मेज़ पर से ले लो,” मां ने कहा।

पिताजी की मेज़ पर तरह-तरह के कागज़ों का एक
ढेर था। पहले आर्थर ने एक साफ और मोटा सा कागज़
चुना। फिर उसने मोटी लाल पेंसिल उठाई। उसने अब
कागज़ को फर्श पर रखा और पेट के बल लेट कर चित्र
बनाने लगा।

"You'll see," he exclaimed. "I'll drive it away. "Pon
my honour, I will. Mummy, do you hear me, Mummy?"

"What's the matter, son?" came his mother's voice
from the kitchen.

"I need some paper," he said.

"Take it from Father's desk," she said.



Father's desk contained a mass of assorted papers.
First Arthur selected one clean sheet. Then he chose a
thick red pencil. He placed the paper on the floor, lay
down on his stomach and began to draw. He was
trying so hard he even poked his tongue out. He drew
a blood red sun - such a nice sun, with sunshine so
warm it made Arthur's face perspire.

Finally the sun was ready. Arthur shooed off Kotot,
who was excitedly jumping around him, so that the
rascal would not put his grubby paws on the sun. And
he took the sun to Grannie.

वह चित्र बनाने में इतना मशगूल था कि उसको इस बात का पता भी न चला कि उसकी जीभ मुंह से बाहर निकली थी। उसने एक लाल सुर्ख सूरज बनाया। इतना प्यारा सूरज कि उसकी तेज गर्मी से आर्थर के मुंह से पसीना छूटने लगा।

अंत में सूरज तैयार हो गया। आर्थर ने अपने पिल्ले कोटो को भगा दिया कि कहीं वह अपने गंदे पंजों को सूरज पर न रख दे। फिर वह अपने सूरज को दादी के पास ले गया।

“दादी! क्या तुम मुझे सुन रही हो दादी?” उसने पूछा।

“क्या बेटा?” दादी बुदबुदायीं।

“देखो मैंने तुम्हारे लिए सूरज बनाया है।”

दादी ने सूरज देखा और मुस्करायीं।

“कितना प्यारा, लाल सा सूरज बनाया है तुमने,” दादी ने खिलखिलाते हुए कहा, “और कितना गर्म है यह सूरज। लाओ मैं इसे अपने दर्द करते पैर के पास रखती हूँ।”

"Gran, do you hear me, Gran?" he asked.

"What dear?" she murmured.

"See, I've drawn you a sun."

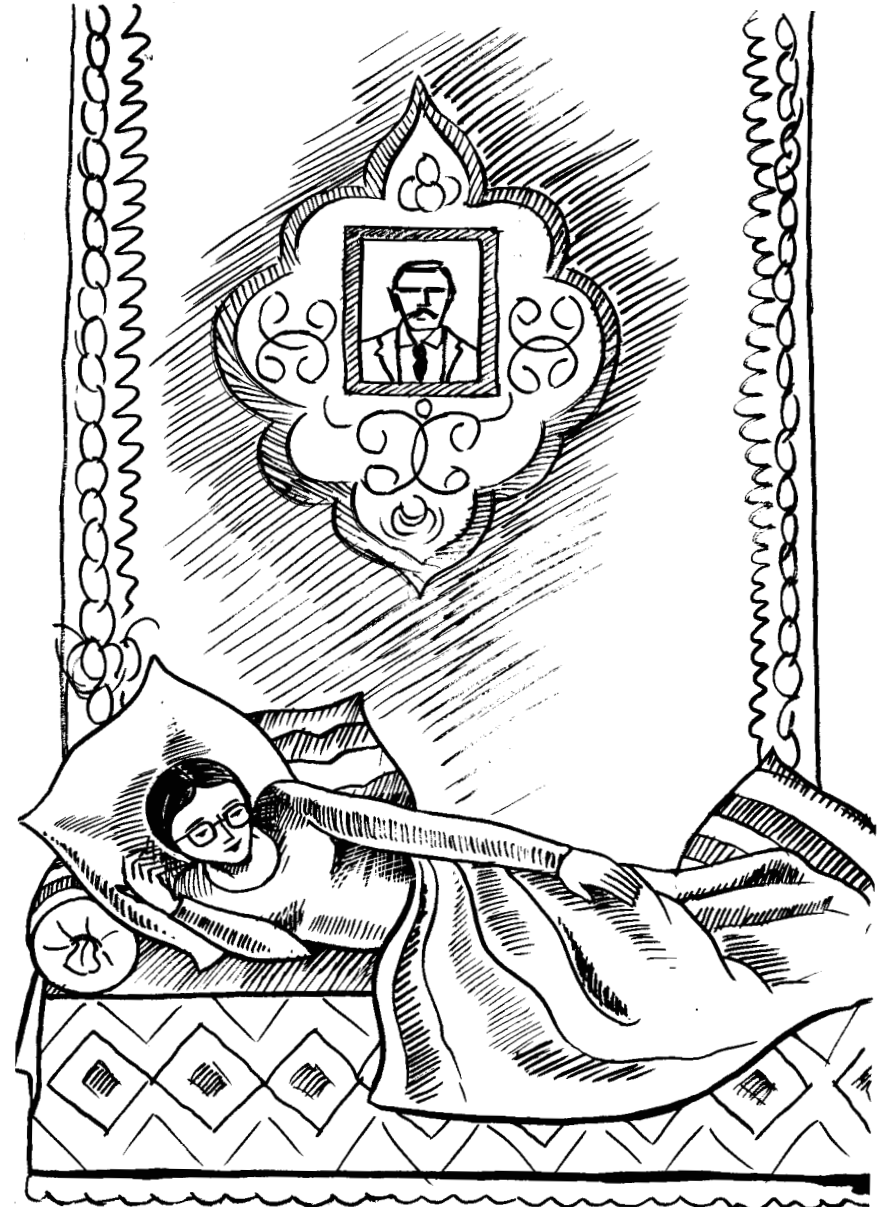
Grannie looked at the sun and smiled.

"What a lovely red sun," she said, clucking her tongue.

"And how warm it is. Here, let me put it near my leg."

Grannie took the sun and put it to her bad leg.

"Now that's a sun, all right. Do you know, the pain in my leg has altogether gone. Who cured Grannie? It is Arthur."



दादी ने सूरज को अपने दर्द करते पैर से सटा कर रख दिया।

“अरे इस सूरज ने तो कमाल ही कर दिया। क्या तुम्हें पता है कि मेरे पैर का दर्द अब पूरी तरह गायब हो गया है। और किसने दादी को ठीक किया? आर्थर ने।”

दादी ने अपने पोते को गले लगा लिया, फिर उन्होंने उसे चूमा, फिर वह मुस्करायीं और दुबारा उन्होंने आर्थर को चूमा। वो मुस्कराती रहीं और आर्थर को तब तक चूमती रहीं जब तक उन्हें नींद न आ गई। और फिर दादी आर्थर के सूरज को अपने पैर पर रख कर सो गयीं।

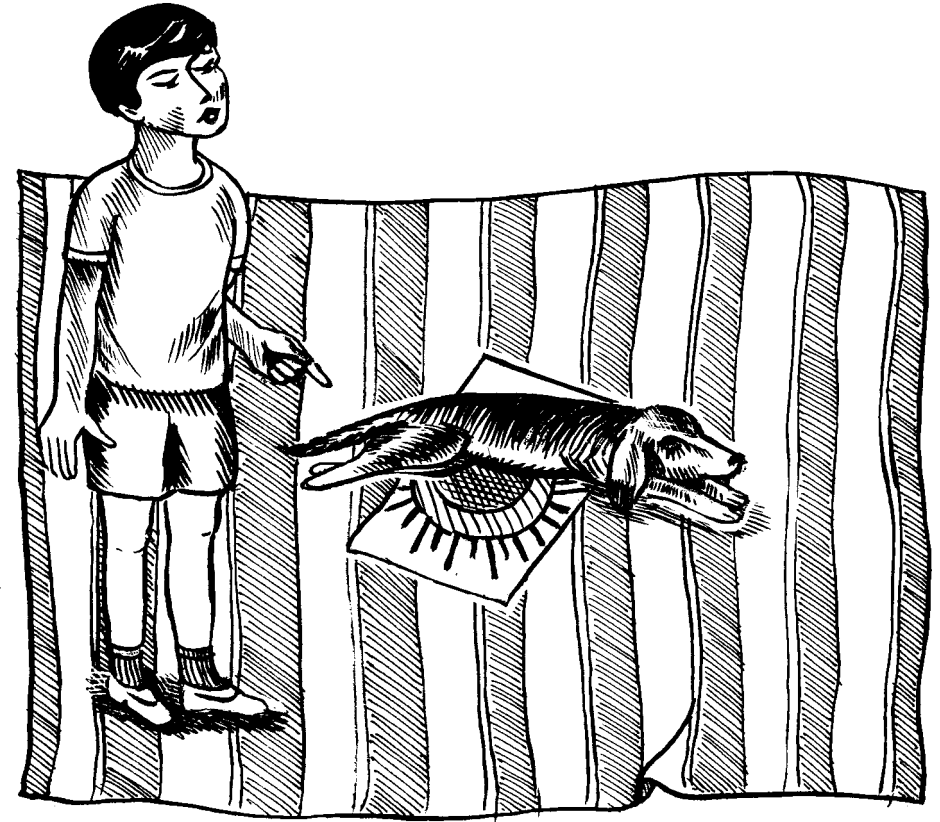
शाम तक दादी के पैर का दर्द एक दम रफूचक्कर हो चुका था। यह बात सच है कि अब तक आर्थर का बनाया सूरज खाट से नीचे गिर चुका था, और कोटो पिल्ले के गंदे पंजों के दर्जनों निशान अब तक सूरज पर छप चुके थे। परन्तु दादी अब बिल्कुल भली चंगी थीं।

उस रात पिताजी ने दादी से उनकी तबियत के बारे में पूछा। “अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ,” दादी बोलीं, “आर्थर के सूरज ने मुझे ठीक कर दिया?”

पिताजी के कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। परन्तु दादी ने उन्हें सब कुछ समझा दिया।

आर्थर ने खुशी से अपनी नाक खुजलाई।

आर्थर के साथ हमेशा ऐसा ही होता था। जब कभी भी वह थोड़ा भी उत्साहित होता या रोने लगता तो हमेशा उसकी नाक में खुजली आती।



Grannie kissed her grandson, then smiled, then kissed him again, then smiled once more and continued to smile and kiss little Arthur until she felt drowsy and nodded off to sleep with Arthur's sun on her leg.

By evening, Grannie's leg did not hurt at all. True, Arthur's sun had fallen off the settee to the floor, and silly Kotot had trodden on the sun several times with his dirty paws; but Grannie was already healed.

That evening Father asked Grannie how she was feeling.

आज आर्थर अपने आप से बेहद खुश था। उसके अच्छे व्यवहार को देख पिताजी ने कहा कि अन्य बच्चों को आर्थर के उदाहरण से सीखना चाहिए। और फिर वह पलंग पर सोने चला गया।

आर्थर का सूरज फर्श पर पड़ा था। और उस सूरज के ऊपर उसका पिल्ला कोटो अपना पेट पसारे सो रहा था। आर्थर उस पर चिल्लाया, “उस पर से उठो कोटो। तुम सूरज के ऊपर कैसे सो सकते हो। तुम्हारा पेट जल जायेगा। चलो उठो!”



"Fine, thanks," she said. "Arthur's sun cured me." Father did not understand. But Grannie explained all to him.

Arthur scratched his nose with pleasure.

It was always like that. Arthur's nose always itched when Arthur got excited, and when he cried as well.

Today Arthur was very pleased with himself. He was so kind and well-behaved that Father even said that Arthur ought to be an example to other children. And off he went to bed as a prize example.

Arthur's sun lay on the floor. And on top of the sun, stretched out on his stomach, slept the pup. Arthur shouted at him:

"Get up, Kotot. How can anyone sleep on top of the sun? You'll burn your stomach. Get up."

